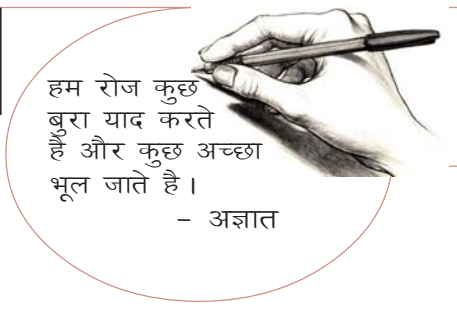


# एक बाग और एक जंगल

**उनका मतलब उस लापरवाही से था जिसके चलते पिछले कुछ दिनों से पेड़ बेतरतीबी से फैलने लगे थे। घास सूखने लगी थी और फूल मुरझा रहे थे। एक बाग और एक जंगल में यही फर्क है। पहले में एक तरतीब है जो उसे इंसानी नजर में खूबसूरत बनाती है।**

संजय खाती।

मेरे घर के पास एक पार्क है। करीने से लगाई गई बाड़, संवरे हुए पेड़, फूलों की क्यारियां, कटी हुई हरी दूब। सुकून और आराम का एक छोटा सा गुलदस्ता हो जैसे। कल किसी ने कहा, यह पार्क तो जंगल बन रहा है। उनका मतलब उस लापरवाही से था जिसके चलते पिछले कुछ दिनों से पेड़ बेतरतीबी से फैलने लगे थे। घास सूखने लगी थी और फूल मुरझा रहे थे। एक बाग और एक जंगल में यही फर्क है। पहले में एक तरतीब है जो उसे इंसानी नजर में खूबसूरत बनाती है। दूसरा बेतरतीब है इसलिए जंगल है। यानी जिसकी ग्रोथ में कोई सिस्टम नहीं, कोई डिजाइन नहीं, कोई मतलब नहीं, और इसीलिए खूबसूरती भी नहीं। लेकिन अभी मैंने कुछ ऐसा जाना जिसके बाद मेरा नजरिया ही बदल गया।

अब अगर मैं किसी जंगल से गुजरा तो यह नजरिया मुझसे कहेगा, जरा आहिस्ता से, जरा संभल कर, यह जंगल बहुत नाजुक है। एक मकसद, एक डिजाइन के तहत लाखों बरसों की मेहनत ने इसे तैयार किया है। इंसान चाहे भी तो कभी ऐसा जंगल नहीं बना पाएगा। इसे खुद कुदरत ने गढ़ा है। इसलिए इसके साथ बहुत इज्जत से पेश आओ। देखो, जंगल डिस्टर्ब ना हो, क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो क्या पता कोई आपदा आ जाए। 'द सीक्रेट लाइफ ऑफ प्लांट्स' नाम की एक किताब है पीटर टोंपकिंस की। इसका एक हिस्सा मैं आपको सुनाता हूं।

'एक फूल से खूबसूरत और कुछ नहीं है इस ग्रह पर। एक पेड़ से जरूरी कुछ नहीं है। धरती पर छाई हुई यह हरियाली ही इंसानी जीवन का असली आधार है। इन हरे पेड़ों के बिना न तो हम सांस ले सकते हैं और न पेट भर सकते हैं। हर एक पत्ती के नीचे लाखों होंठ कार्बन डाइऑक्साइड पीने और ऑक्सिजन उगलने में लगे हैं। हर रोज ढाई करोड़ वर्गमील के बराबर फैली ये पत्तियां फोटोसिंथेसिस के जरिए हमारे लिए ऑक्सिजन और भोजन तैयार करती रहती हैं। हर बरस हम जो 375 अरब टन खाना खाते हैं उसका ज्यादातर हिस्सा ये पेड़ ही जमीन और हवा से सूरज की रोशनी की मदद लेकर तैयार करते हैं। फोटोसिंथेसिस की मिठास से ही हमें वे सब चीजें मिलती हैं जो हमें जिंदा और सेहतमंद रखती हैं।'

कुदरत और प्लांट लाइफ का यह वो सच है जिसे हम नजरअंदाज किए रहते हैं। लेकिन इस सीधे–सादे सच के पीछे कैसी बारीक बुनावट है, इसे मैंने एक दूसरी किताब से जाना। 'द सीक्रेट विजडम ऑफ नेचर' में पीटर वोलेबेन ने कुदरत की तुलना घड़ी से की है। वह मैकेनिकल घड़ी जो हमारे बचपन में हमें किसी जादू जैसी लगती थी। शायद ही कोई बच्चा होगा जिसने मौका मिलते ही इस जादू के भीतर झांकने की कोशिश न की हो। मेकेनिकल घड़ी के भीतर अनगिनत यंत्रों का एक ऐसा जटिल जाल दिखता है जो किसी अदृश्य नियम में बंधे हुए एक दूसरे के साथ मिलकर वक्त की धड़कनों को कैद करते जाते हैं। हमारा बाल मन इस सिस्टम को बूझने के लिए मचलता है। हम उन पुर्जों को अलग–अलग करने की कोशिश करते हैं और जल्द ही हमारे पास चमकीले पुर्जों का एक ढेर लग जाता है। घड़ी गायब हो जाती है और फिर कभी वापस नहीं लौटती।

## भावनाएं बेवजह

**अशोक वोहरा।**

धर्म-दर्शन

आप यह महसूस करेंगे कि ये सभी भावनाएं बेवजह आपके भीतर उमड़ रही हैं, जिनका आपके जीवन से कुछ लेना देना नहीं है। जब आप चेतना का प्रकाश डालते हैं तब आपके जीवन से हर अनिश्चित चीज गायब होने लगती है। एक बार आप इस काल में माहिर हो गए तो आपकी उपस्थिति की चमक दोगुनी होकर बिखरने लगेगी और जब कभी आपको लगेगा कि आपके भीतर की अवचेतना आपको खींच रही है तो आप सहजता के साथ उसे नियंत्रित कर लेंगे। हालांकि सामान्य अवचेतना को प्रारंभिक चरण पर पहचाना नहीं जा सकता क्योंकि ये बहुत सामान्य प्रतीत होती है। आपको अपनी भावनात्मक और मानसिक स्थिति का निरीक्षण स्वयं करने की आदत डालनी होगी।

विचारों के स्तर पर आप न्याय, असंतोष, मानसिक प्रक्षेपण के रूप में प्रतिरोधक शक्तियों का भी सामना करेंगे।

## संपादकीय

### जानलेवा वायरस

अमेरिका और चीन के बीच लंबे अरसे से चले आ रहे ट्रेड वार ने इन दोनों देशों के आपसी संबंधों में जो कड़वाहट पैदा कर दी थी ,उसे कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप ने और बढ़ा दिया है। अमेरिका ने जिस तरह चीन होकर आने वाले विदेशी नागरिकों के अमेरिका में प्रवेश पर पाबंदियां लगाई है, उसपर चीन ने अपनी राय देने से कोई परहेज नहीं किया है। चीन ने आरोप लगाया कि अमेरिका इस समय अति प्रतिक्रिया देकर दहशत फैलाने चाहता है कि इस संकट की घड़ी में विश्व के दूसरे देशों को कोरोना वायरस के प्रकोप से निपटने के लिए चीन की मदद हेतु आगे आने चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन के कार्यकारी बोर्ड के 146 वे सत्र में चीन ने आशा व्यक्त की है कि अमेरिका सहित अन्य देश इस वायरस से निपटने में मदद करेंगे। गौरतलब है कि चीन में कोरोना वायरस के प्रकोप की खबर के बाद अमेरिका ने इमरजेन्सी लागू करते हुए घोषणा कर दी थी कि जब तक चीन में स्थिति सामान्य नहीं हो जाती, तब तक उन विदेशी नागरिकों को अमेरिका में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी जिन्होंने पिछले दो सप्ताह की अवधि में चीन की यात्रा की हो। इसके अलावा जो अमेरिकी नागरिक चीन से लौट रहे हैं उन्हें भी 14 दिनों तक चिकित्सकीय निगरानी में रखा जाएगा। चीन ने अमेरिकी सरकार के इस फैसले को अनुचित बताते हुए कहा है कि यह विश्व स्वास्थ संगठन के निर्देशों का उल्लंघन है। चिकित्सकीय शोध के अनुसार कोरोना वायरस अनेक प्रकार के होते हैं, परंतु अधिकांश से लोगों की जान को कोई खतरा नहीं होता है, परंतु कोरोना वायरस का नया प्रकार जानलेवा है।

**कई देशों के द्वारा यह संदेह व्यक्त किया जा रहा है कि कोरोना वायरस से संक्रमित मृतकों एवं गंभीर रूप से बीमार लोगो की जो संख्या चीन सरकार द्वारा बताई जा रही है, वह एकदम विश्वसनीय नहीं है।**

# कोरोना वायरस का प्रकोप

एम झा।

जानलेवा कोरोना वायरस से अब तक चीन में लगभग 400 से अधिक लोगों की असमय मौत हो गई है वही इस वायरस से संक्रमित 18 सौ से अधिक मरीजों की हालत गंभीर बताई जा रही है। चीन के जिस वुहान शहर को कोरोना वायरस के प्रकोप का केंद्र बताया जा रहा है, वहा नौ दिन के अंदर 1000 बिस्तर वाला सर्व सुविधा संपन्न अस्पताल का निर्माण इस हकीकत को उजागर करता है कि चीन सरकार ने स्थिति की भयावहता को भली भांति महसूस कर लिया है। शायद इसीलिए 1000 बिस्तरों वाले इस अत्याधुनिक सुविधा संपन्न अस्पताल के अलावा 14 बिस्तर वाला एक नए अस्पताल का निर्माण भी द्रुतगति से तैयार किया जा रहा है। चीन में सरकार द्वारा कोरोना वायरस के प्रकोप पर नियंत्रण हेतु बहुत सारे कदम उठाए गए हैं। एक करोड़ 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले वुहान सहित हुबेई प्रान्त के स्थानीय लोगों की कहीं भी आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

इस वायरस के प्रकोप से लोग इस कदर भयभीत हैं कि जो वुहान शहर की सड़कें हमेशा गुलजार रहती थी ,वहां सन्नाटा पसरा हुआ है। दुकानों में ताले लटके हुए हैं और कोई दावे के साथ नहीं कह सकता है कि यह स्थिति आगे

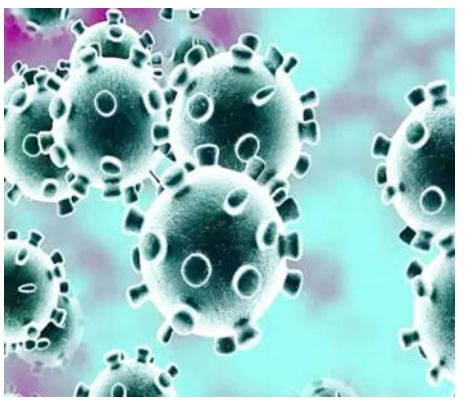

कब तक बनी रहेगी। कई देशों के द्वारा यह संदेह व्यक्त किया जा रहा है कि कोरोना वायरस से संक्रमित मृतकों एवं गंभीर रूप से बीमार लोगो की जो संख्या चीन सरकार द्वारा बताई जा रही है, वह एकदम विश्वसनीय नहीं है। चीन में जिस तरह खबरों के प्रचार–प्रसार पर पाबंदी लगा दी गई है, उसे देखते हुए यह स्वाभाविक है कि इस संक्रमण से होने वाली मौतों एवं गंभीर रूप से बीमार लोगों की सही जानकारी बाहर नहीं पहुंचने पा रही है। उधर चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग में इस तरह के संदेश को निराधार बताते हुए कहा कि कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों में से करीब 250 स्वस्थ होकर घर लौट चुके हैं। आयोग ने दावा किया है कि कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए सरकार के द्वारा जो भी कदम उठाए जा रहे हैं ,उनमें पूरी तरह पारदर्शिता बरती जा रही है। वायरस के प्रकोप से जुड़ी किसी भी जानकारी को नहीं छुपाया जा रहा है। चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग ने कहा कि इस समस्या से निपटने में सरकार की ओर से कोई लापरवाही नहीं बरती गई है। सरकार को अपनी जिम्मेदारी का एहसास है।

चीन सरकार के दावे के बावजूद दुनिया के अनेक देशों की सरकारें यह मानने के लिए तैयार नहीं है कि चीन ने इस वायरस के बढ़ते प्रकोप के बारे में शुरू से ही कुछ नहीं छिपाया। कहा जाता है कि इस वायरस के संक्रमण की शुरुआत तो गत दिसंबर माह के अंत में ही हो गई थी, जब वहां के एक अस्पताल में सात मरीजों के शरीर में किसी रहस्यमय बीमारी की शुरुआत को देखते हुए उन्हें अस्पताल के आइसोलेशन वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया था। तब ही यह आशंका व्यक्त की गई थी कि कहीं चीन में दहशत पैदा करने वाला यह वायरस 2002 में दहशत पैदा करने वाले भयावह सोर्स का ही दूसरा रूप तो नहीं है। गौरतलब है कि उस समय उसकी वजह से लगभग 800 लोग काल के ग्रास में समा गए थे। जितनी तेजी से इसके प्रकोप का दायरा बढ़ रहा है, उसे देखते हुए दुनिया के अधिकांश देशों ने अपने यहा जरूरी कदम उठाना शुरू कर दिया है।

### सूडोकु नवताल-5253

मध्यम

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 6 | | 3 | | 8 | 9 | | 7 |
| | 1 | | 9 | | 6 | | 5 | 4 |
| | | | | | | 8 | | |
| | 4 | | 5 | | | | 8 | |
| 2 | | 5 | | 4 | | 6 | | 1 |
| | 3 | | | | 1 | | 7 | |
| | | 3 | | | | | | |
| 5 | 9 | | 7 | | 2 | | 6 | |
| 7 | | 6 | 4 | | 3 | | 9 | 2 |

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5252 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 7 | 2 | 3 | 8 | 4 | 1 | 9 | 6 |
| 8 | 6 | 1 | 9 | 2 | 5 | 7 | 3 | 4 |
| 3 | 9 | 4 | 1 | 6 | 7 | 5 | 8 | 2 |
| 2 | 5 | 7 | 4 | 1 | 3 | 8 | 6 | 9 |
| 4 | 8 | 6 | 5 | 9 | 2 | 3 | 7 | 1 |
| 1 | 3 | 9 | 6 | 7 | 8 | 4 | 2 | 5 |
| 6 | 2 | 3 | 7 | 4 | 1 | 9 | 5 | 8 |
| 9 | 4 | 5 | 8 | 3 | 6 | 2 | 1 | 7 |
| 7 | 1 | 8 | 2 | 5 | 9 | 6 | 4 | 3 |

## अपना ब्लॉग

### अर्थव्यवस्था की कमजोर हालत

**मोहन।** अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई ने गरीबों को भोजन जैसी बुनियादी आवश्यकता से भी दूर कर दिया है। बढ़ती विषमता का एक नतीजा यह भी है कि गरीब और वंचित आबादी हमारी प्राथमिकता में नीचे चली गई। लिहाजा उस तक जरूरी चीजें पहुंचाने की चिंता भी कम हो गई। यह स्थिति सिर्फ भारत में नहीं अन्य देशों में भी है। इसीलिए हम देखते हैं कि जहां दुनिया में एक बड़ी आबादी भोजन नहीं जुटा पाती, वहीं हर साल एक अरब टन से ज्यादा भोजन बर्बाद हो जाता है। जहां तक भारत की बात है तो अर्थव्यवस्था की कमजोर हालत पिछले कुछ समय की बात है। इससे पहले हालात अलग थे। बीते एक दशक में देश की आर्थिक विकास दर काफी ऊंची रही। इसी का नतीजा था कि उभरती अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में दुनिया भर में अपनी पहचान बनाने वाले भारत के बारे में यह कहा जाने लगा कि वह जल्द ही एक आर्थिक महाशक्ति बनने जा रहा है। लेकिन अक्सर तरक्की की तस्वीर पेश करते वक्त गरीबी और भुखमरी जैसे पहलुओं को अनदेखा कर दिया जाता है।